आरती श्रीमद्भगवद्गीता जी की (२)

जय भगवद्गीते जय भगवद्गीते
हरि-हिय-कमल -विहासिणी सुन्दर सुपुनीते ।।
कर्म-सुमर्म प्रकाशिनि, कामासक्ति हारा ।
तत्वज्ञान -विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा ।।
निश्चल भक्ति विधायिनि निर्मल मलहारी ।
शरण -रहस्य प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ।।
राग -द्वेष -विदारिणी कारिणी मोद सदा ।
भव-भय हारिणी तारिणी परमानन्दप्रदा ।।
आसुरभाव विनाशिनि, नाशिनी तम-रजनी ।
दैवी सद्गुण दायिनि, हरि रसिका सजनी ।।
समता,त्याग सिखावनि, हरि मुख की बानी ।
सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियों की रानी ।।
दया-सुधा बरसावनी मातु ! कृपा कीजै ।
हरि-पद-प्रेम दान कर, अपनौ कर लीजै ।।

विवरण

श्रीमद्भगवद् गीता की जय हो । ये भगवद्गीता प्रभु के कोमल हृदय में विहार (भ्रमण)करने वाली हैं, अत्यन्त सुन्दर और पवित्र है ये गीता । कर्म एवं मर्म को प्रकाशित करनेवाली हैं एवं बड़ी ही शक्तिदायिनि है, तथा तत्वज्ञान (ईश्वर के विषय का ज्ञान) का विकास करने वाली तथा ब्रह्म विद्या को देनेवाली है । मनुष्य के मन में जो भक्ति के भाव उत्पन्न होते हैं, ये गीता उनकी विधि है एवं मन के सब दोष एवं विकार को मिठाकर शुद्ध कर देती है ।

जो गीता की शरण में जाकर उसके रहस्य को जानना चाहता है उसे सभी प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है । मन के अन्दर जो राग-द्वेष (ईर्ष्या) है उनको नष्ट करके कोमलचित्त प्रदान करने वाली है ।

जन्म -मरण के जो भय है, उनको मिटाकर, परमानन्द की अनुभूति कराकर मनुष्य जीवन को तारनेवाली है । मनुष्य के अन्दर जो राक्षसी प्रवृति होती है उसे नष्ट करके मन के सारे अन्धकार को नाश करके, सभी गुणों को देने वाली ये गीता भगवान की रसिका भी है ।

ये गीता समान भाव एवं त्याग को सिखाती है तथा भगवान के मुख की वाणी भी है । यह गीता सभी शास्त्रों की स्वामिनी तथा श्रुतियों की रानी है । हे माँ गीते ! हम पर दया कृपा करके दया रूपी अमृत की वर्षा कीजिएगा । प्रेम से प्रभु पद का दान कर हमें अपना बना लीजिएगा ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.